सीमा 'नयन'

गीत

पूर्ण हों जाये सभी कर्तव्य जब तो,
जब लगे है सन्निकट अवसान अब तो,
दूर जाने जब लगें संबंध प्यारे
तब चले आना उसी गंगा किनारे।

मै वहीं तब भी मिलूंगी राह तकती,
हो अगर सच्ची कहां तब प्रीत थकती,
मत समझना दोष कुछ तुम पर मढ़ूंगी,
हो तुम्हें संकोच तो आगे बढ़ूंगी,
ये न पूछूंगी गये थे छोड़कर क्यों,
जो किये अनुबंध उनको तोड़कर क्यों,
क्यों मुझे ये भी न पूछूंगी बिसारे।
तुम चले आना उसी गंगा किनारे।।

जब किये उपहार सब वापस सभी तो,
जो हृदय रक्खा वो लौटाते कभी तो,
बंद कर संपर्क के जब तार बैठे,
फिर कहो क्यों आ नयन के द्वार बैठे,
जो बिताई साथ में मधुमय घड़ी थी,
वो रही अनुरक्ति या धोखाधड़ी थी,
व्यर्थ हैं अब ये निरर्थक प्रश्न सारे।
तुम चले आना उसी गंगा किनारे।।

रह गई जो अनकही बातें करेंगे
स्वप्न थोड़े रेत के घर में धरेंगे
बीन लाना सीपियां कुछ घाट पर से,
पुष्प लाउंगी नदी के पाट पर से,
तुम बना गजरा मेरे कुंतल सजाना,
मैं सुनाउंगी वो अधलिक्खा तराना,
टिमटिमायेंगे खुशी से नैन तारे।
तुम चले आना वहीं गंगा किनारे।।

स्वप्न से निःशेष दृग तन को नहीं चिंता जलाती,
कुछ अरुचिकर भी नहीं लगता न कोई चीज़ भाती,
शून्य मन रम सा गया वैराग्य मठ के सन्निकट है।
अब मुझे दे दो विदा विश्राम की बेला निकट है।

खग विहग नभ से सभी निज नीड़ को प्रस्थान करते,
सांध्य बेला में सभी हो क्लांत घर में पांव धरते,
सुबह का भूला भी संध्या को निकेतन लौट जाता,
जो जहां का है वहीं पर जा सदा विश्रांति पाता,
छोड़ कर जाना है जग ये सृष्टि का आशय प्रकट है।
अब मुझे दे दो विदा विश्राम की बेला निकट है।।

कामनाओं के हुए सब ज्वार संयत मौन धारे,
अब नहीं इच्छा रही है शेष की कोई पुकारे,
रिक्त मरूथल सा हृदय तन मुक्ति को है चिर प्रतीक्षित,
पर कहां कुछ भी लिखा इन हस्त रेखाओं में इच्छित,
साँस की जो चल रही कटती नहीं डोरी विकट है।
अब मुझे दे दो विदा विश्राम की बेला निकट है।।

विश्व के इस मंच पर पारी हुई है पूर्ण लगभग,
पास अपने खींचती है उस क्षितिज की ज्योति जगमग,
व्योम के विस्तार में होना विलय चित चाहता है,
चेतना से हो रहा परिचय इसे पहचानता है,
हो रहा जीवन से अंतर्ध्यान सारा छल कपट है,
अब मुझे दे दो विदा विश्राम की बेला निकट है।